IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्री नरेश मेहता कृत काव्य में आधुनिक–बोध

डॉ.सरूप रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग ,
संत हरि सिंह मेमोरियल कॉलेज फॉर विमेन
चेला मखसूसपुर , होशियारपुर , पंजाब

संस्कृति हमारे उन गुणों के समूह का नाम है जो परंपराओं से परिष्कृत होकर वर्तमान की उपयोगिता पर अपने अस्तित्व को बनाए रखती है।भारत की संस्कृति की ये विशेषता है कि समय के लिए उपयोगी परंपराओं को बनाए रखती हैं और जो उपयोगी नहीं है उन्हें पीछे छोड़ती चलती है।ये देश अनेक संस्कृतियों के घटकों से बनी संस्कृति का देश है,जिसमें मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध,जैन आदि संस्कृतियों के तत्व सिमटे हुए है।हमारी संस्कृति के शाश्वत मूल्य उदारता, दया, क्षमा, सहानुभूति,प्रेम, विश्व– बंधुत्व, राष्ट्रीयता ऐसे मूल्य है जो संस्कृति की आभा को कभी फीकी नहीं पड़ने देते,समन्वयात्मकता हमारी संस्कृति का विशेष गुण है।

आधुनिकता:– आधुनिकता इस शताब्दी का सबसे अधिक विवादास्पद शब्द बनकर हमारे सामने है।आधुनिक शब्द ' आधुनिक' विशेषण से बना है। यह विशेषण मानव के पक्ष में दो दिशाओं की ओर इशारा करता है— प्रथम भौतिक परिवेश,दूसरा, मानसिक परिवेश।आज की आधुनिकता कल की प्राचीनता हैं। वर्तमान भी प्राचीन होने को तत्पर है, प्राचीनता का ह्रास और ध्वंस ही आधुनिकता है। साधारण शब्दों में कहे तो आधुनिकता का स्वरूप जो कल था,वर्तमान में भी वैसा ही है,मगर यही स्वरूप भविष्य में भी दृष्टिगोचर होगा,इसका प्रमाण नहीं दिया जा सकता।विद्वानों ने आधुनिकता को भिन्न – भिन्न ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है:–

रमेश कुंतल मेघ के अनुसार, "आधुनिकता एक विचार – विधि,एक व्यवस्था की समग्र धारणा,एक चिन्तन पद्धति,एक वृत्ति अथवा मूल – चक्र से अभिहित होती है,जिसे हम आधुनिकता कहते हैं। वह मात्र एक प्रक्रिया का नाम है। नैतिकता में उदारता बरतने की, बुद्धिवादी बनने की,धर्म के सही रूप में पहुंचने की प्रक्रिया है, आधुनिकता वह धारा है जो भारत में खुद – ब – खुद उत्पन्न हुई थी।"१

प्रभाकर माचवे के शब्दों में, "विगत सांस्कृतिक मूल्यों को अपने अंदर समेट कर मानव की वर्तमान स्थिति और उसके भविष्य विषयक दायित्व की सक्रियता और चेतना को स्वीकार करना।आज के संघर्षशील जीवन में मनुष्य की संवेदना कुछ दूसरे और नए ढंग से अनुभव कर रही है। अनुभूति और संवेदना का यह नयापन आधुनिकता का ही अंग है।"२

रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार, "आधुनिकता वह धारा है जो जाति वंश और गोत्र में विश्वास नहीं करती,जो सभी धर्मो में एकता लाकर मनुष्य – मनुष्य को एक बनाना चाहती है।"३

आधुनिकता का संबंध यूरोप से माना गया है।आधुनिकता यथार्थ की गति को मानती है, निरंतर नए की ओर गतिशील चेतना की वृत्ति आधुनिक है।आधुनिकता व्यक्ति को नए अनुभवों और नए प्रयोगों के प्रति सजग बनाती है। अतः यह एक विचार – विधि है। प्रत्येक युग और समय में आधुनिकता की प्रक्रिया चलती रहती है, क्योंकि मनुष्य,उसके जीवन मूल्य और उसका परिवेश बदलता है।आधुनिकता निरंतर चलते रहने और नए होते रहने की प्रक्रिया का नाम है।ये पुराणिकता को नहीं मानती और न ही पीछे मुड़ना चाहती है।

श्री नरेश मेहता और उनका आधुनिक-बोध:–

नरेश मेहता युग चेतना के कवि हैं। उन्होंने पुराण -कथाओं को क्षति पहुंचाए बिना उन्हें युग संदर्भ प्रदान किया है। प्रकृति और सौंदर्य को आधार बनाकर कवि ने आधुनिक जीवन की विषमताओं -विवशताओं पर विचार किया है।युग -चेतना के अंतर्गत कवि, "समसामयिक जीवन में व्यापत प्रश्निल स्थितियों , दारुण यंत्रणाओं , विवश जीवन, अभिशप्त व्यक्तित्व और अस्तित्व के प्रति खतरा अनुभव करता हुआ संकट के उस हर क्षण पर अपनी उपस्थिति बताता है जहां जीवन निसार, बोझिल, अकेला ओर विवशता का पर्याय बन गया है।नरेश एक प्रचेता कलाकार है।उन्होंने प्रकृति की जितनी छवियों के अपने काव्य में स्थान दिया है वे सभी उन्हें सामाजिकता से जोड़ती आधुनिकता की ओर ले आई हैं।"४ नरेश ने प्रकृति के जितने भी स्वरूपों को अपने काव्य का आधार बनाया वे सभी स्वरूप उन्हें सामाजिकता से जोड़ते हुए आधुनिकता की ओर ले आए हैं। कवि श्री नरेश मेहता के भावों, विचारों की सहज अभिव्यक्ति उनके काव्य में प्रकृति के रूप में विद्यमान है,कई पाठक अथवा आलोचक मेहता को प्रकृति का कवि मानते हैं; परन्तु मेहता का के काव्य में प्रकृति– प्रेम के साथ आधुनिक बोध भी समाया हुआ है।जीवन के यथार्थ को कवि ने उदास प्रकृति के माध्यम से शब्दब्ध करने का प्रयास किया है।कविता ' बीमार सांझ के किनारे ' में कवि को सभी बीमार और बेहोश दिखलाई पड़ते हैं।काव्य पंक्तियां देखिए:–

सांझ की ये रोशनियां/पीले टिंचर की तरह/फैल रही, फैल गयी।/आज तो बीमार सभी,/बेहोश सभी,/सबके दिमागों में भरा/क्लोरोफोम की महक की तरह तेज/यह अंधेरा, ओ अंधेरा –/वो अंधेरा – (समिधा – १, पृष्ठ ५१)

प्रकृति चित्रों के माध्यम से आधुनिक संदर्भ प्रस्तुत करती कविता ' वर्षा भीगा शहर ' निम्नमध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को दिखाता है।बरसती जीवन की झांकी प्रस्तुत करती पंक्तियां देखिए:–

अभी के भीगे हुए इस शहर पर/झुक गई है वक्ष जननी – सी,/यह रख रंग की सांझ –/बेलन,/लोइयां फैल रहे होंगे,/आंच/माथे पर तवा रख रोटियों के फूल बेचेगी अभी। (समिधा – १, पृष्ठ ५५)

आधुनिक समाज के दिखावटी स्वरूप पर कवि ने व्यंग्यात्मक प्रहार किए है। प्रस्तुत उदाहरण देखिए:–

> लोमड़ियों की तरह चालाक/एक आकाश/झूठे प्याले – सा/एक शहर,/फटे हुए विज्ञापन – सी/एक शाम/और –/और भी बहुत – कुछ होता है/जब मैं मात्र अकेला होता हूं/अपने को छोड़ और अब होता हूँ/.../सफलता/जैसे डॉक्टर की दुकान थी/सब बूढ़े मसूड़े/चमकदार सफलताएं लगाए/सफल उपन्यास के सर्ग लगा रहे थे।.../जब मैं मात्र अकेला होता हूँ/तब मैं नहीं/इन बूढ़े मसूड़ों का/सफल व्यक्तियों का जुलूस होता है।,(समिधा – १, पृष्ठ १२४)

आज का मानव सत्य को स्वीकार करना नहीं चाहता।उसकी दृष्टि सूक्ष्म से स्थूल की देखने की आदि हो गई है।कवि के शब्दों में विडंबना का ऐसा ही स्वरूप प्रस्तुत है:–

> उसे विनेत्र देख/मैंने कहा –/सत्य आग्नेय है /उसे उलझे देखा।मैने कहा –/सत्य तेजस है;/उसे लौटे देख /मैने कहा –/ सत्य अप्राप्य है। /लोगो ने तपस्वी सम्पाति को नहीं/मुझे ऋषि कहा। (समिधा – १, पृष्ठ १३७)

वंश परम्परा से चली आने वाली विवशता को कवि यह जानते हुए अस्वीकृत कर देता है कि विवशता का वंश वासुधैव है।वह अपनी अगली पीढ़ी को नए रूप में देखना चाहता है। इसी विश्वास को आधार मान कर कवि कहता है:-

> पुत्र मेरे –/देह जीवी हम नहीं/दृष्टिजीवी हैं।/हमारा भूगोल काटेगा नहीं इतिहास। (समिधा – १, पृष्ठ १०५)

यह सत्य है कि संशय मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और वह वंशवेल की तरह बढ़ता है। षडयंत्र,हत्या, कत्लेआम आदि कई रूपों में संशय की खिलखिलाहट सुनाई देती है। संशय से बचने का एक ही मार्ग है संकल्पशक्ति। इसके बावजूद सबसे बड़ा प्रश्न यह है –

> स्वयं में बैठे संशय का वध/कैसे होगा!/कैसे होगा!! (समिधा – १, पृष्ठ ९६)

आज का मानव,सत्य को ग्रहण करना नहीं चाहता। ' यदि मैं मेयर होता ' नामक कविता में आधुनिक बोध को व्यंग्यात्मक ढंग से उभारा गया है।कवि ने अपने जीवन की सामान्य घटना को आधुनिक शैली में सूत्रात्मक रूप देकर गंभीर बनाने का प्रयास किया गया है:–

पता नहीं हमें कहां होना चाहिए था,/क्या खोकर क्या पाना चाहिए था,/क्योंकि –/कहीं नहीं होकर हम कहीं होते है। (समिधा – १, पृष्ठ १२३)

जीवन की विवशता तथा भटकाव मानव को निरंतर आगे बढ़ने का संकेत देता है और कई बार निराशा भी उत्पन्न करता है।जिंदगी कटाव भूत कुछ उसी तरह का रहता है जिस तरह ज्वार, सीपियों को भटकाकर किसी अन्यत्र तट तक पहुंचा देता है।प्रस्तुत पंक्तियां देखिए:–

कोई ज्वार/तट की पात्रता देखे बिना/सीपियों के दर्द का संदर्भ/ऐसी भोर में रख जाएगा/चुपचाप/भोर भीगे जलो में लिख जायेगा। (समिधा – १, पृष्ठ १०१)

संकल्प – विकल्प के बीच भटकाव इतना अधिक होता है कि अपना सब कुछ सौंप देने के बावजूद भी व्यक्ति उससे निकल नहीं पाता और सुपात्रों द्वारा उसे विकल्पी घोषित कर दिया जाता है ,तब लौट आने के इलावा अतिरिक्त कोईबचारा नहीं रह जाता:–

मेरा संकल्प/ मेरी प्रतीक्षा में/तट पर भी बैठा था,/मै तब लौटा था। (समिधा– १, पृष्ठ १३९)

नवीनता के समर्थक कवि की वाणी पुरातनता एवं अन्याय के विरुद्ध भी प्रस्फुटित हुई है।वह व्यक्ति की घुटन भरी, बेबस, विचारा बना देना वाली परिस्थिति, पूंजीपतियों से लड़ने के लिए प्रभु बल,वाणी, न्याय पाने की प्रार्थना करता है ताकि अन्याय के अंधकार को हटाने के लिए ध्रुवतारा बनकर कमजोर व्यक्तियों के जीवन को प्रकाशित कर सके:–

प्रभु मोर कण्ठ के/बल देवो, घोष देवो, न्याय देवो ! !/...एक दिन निश्चित करीबे/जनता का भिनसारा। (समिधा – १, पृष्ठ ६१)

कवि की दृष्टि लघु मानवों की ओर भी गई है ।कविता ' वनघासें ' में अपने आप को श्रेष्ठ समझने वाला समाज सामान्यजनों का शोषण – मर्दन करने में हिचकिचाता नहीं ,लेकिन साधारण लोग किसी भी प्रकार का अहं– भाव न रखते हुए अपने कर्त्तव्य पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहते है:–

कहां तुम्हारी श्रेष्ठ शक्ति/ औ क्षुद्रकर्म हम वनघासों का –/अब विनयों की नियति धरा को/ ओसवती दूबो से मंडित करने –/गिरी, वन, मरुथल नगर दूह/हम नाप रही है आदिकाल से। (समिधा – १, पृष्ठ ६३)

कवि समिष्ट – व्यष्टि के संबंधो का निरूपण करते हुए व्यक्ति के स्वत्व को महत्व देता है।कवि का मानना है कि समाज जब व्यक्ति मूल्यों को खत्म कर देता है हैं तो वहां व्यक्तित्व की रक्षा महत्वपूर्ण हो जाती है ,क्योंकि उसका पाना भी एक विशेष मूल्य है:–

यहां वहां लोग ही लोग है/मैं कहा हूँ/तुम्हारे पैरों के नीचे/मेरा नाम दब गया है/उठा लेने दो/मेरे लिए वह मूल्य है। (समिधा – १, पृष्ठ ११४–११५)

कवि अपने अहम भाव के सहारे जीने की ईसा नहीं रखता , बल्कि वह तो सदैव समाज से जुड़ने का आकांक्षी रहा है।वह स्वयं को सामाजिक संदर्भ में काटकर रखना नहीं चाहता है।उसकी प्रार्थना यही है के चारों ओर शांति हो:–

लिख सकूं प्रत्येक की/हाहाकार – कोलाहल कथा/यह एकांत दो। (समिधा – १, पृष्ठ १३६)

काव्य – संग्रह ' बोलने दो चीड़ को ' में संकलित ' बूढ़े मसूड़ों का जलूस ' ,' रक्तहस्ताक्षर ' , ' संदर्भ भट की यात्राएं ' और ' जितने दल उतने संशय' कविताओं में भी कवि की आधुनिक बोधवादी दृष्टि का संकेत मिलता है:–

छायाएं तल जा बैठी/हम नहीं हमारा संशय उनमें प्रतिछापित हैं/ये भय की मुगधाएं/अपनी वंशबेल से/घेरे है मेरी प्रज्ञा को।/स्वयं में बैठें संशय का वध/कैसे होगा?/कैसे होगा? (समिधा – १, पृष्ठ ९५)

' संशय की एक रात ' खंड – काव्य में ' राम ' का व्यक्तित्व आधुनिक समस्याओं को लेकर जूझता है, खंड – काव्य का आधार संशय है। कृति के आरंभ में ही ' क्या हो क्या न हो ' का प्रश्न राम के मानस को उद्विग्न करता है। प्रारंभ में ही निर्णय– अनिर्णय का द्वंद है:–

क्या हो / क्या न हो के प्रश्न ने/थका डाली मुट्ठियां। (समिधा – २, पृष्ठ १८८)

' राम ' आधुनिक व्यक्ति की तरह पराजय, पश्चाताप के प्रतीक हैं।वे अनिर्णय के क्षणों में स्वयं कहते हैं:–

लक्ष्मण/मेरी पात्रता को ज्यों न पूजो/मेरा व्यक्ति/मात्र पश्चाताप है/केवल पराजय है। (समिधा – २, पृष्ठ २०६)

राम के मन में विवशता, संकट इतना गहरा है कि कवि ने उसे पूरी आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया है:–

एक अनुत्तरित संशय का सर्पवृक्ष/ हरहरा रहा मुझमें/पीपल – सा/ अहोरात्र। (समिधा – २, पृष्ठ २१०)

' शबरी ' खण्ड – काव्य त्रेता युग की व्यथा भरी सामाजिक व्यवस्था का वर्णन करता है।सामाजिक वर्ण व्यवस्था में जो असंतुलन युगों से चला आ रहा है वह आज भी व्याप्त है। नरेश मेहता ने 'शबरी' के माध्यम से आत्मिक संघर्ष की बात कही है।मेहता नारी के महत्व को स्वीकार करते हुए कहते हैं, "स्त्री शक्ति है,प्रेरणा है।वह सिद्ध हो जाए तो आपको देवत्व की ऊंचाई तक पहुंचा सकती है लेकिन असिद्ध होने पर रसातल में भी पहुंचा सकती है क्योंकि वह शुद्ध ऊर्जा है।"५

हम जिस समाज में रहते हैं वहां वरण व्यवस्था प्रधान है।इस वर्ण व्यवस्था का एकमात्र उपाय श्रम है। श्रम और कर्म के माध्यम से ही मानव अपना आत्मोत्थान

के सकता है।शबरी के माध्यम से कवि ने इसी धारणा पर विचार किया है, "त्रेता युग की व्यथामयी दिन नारी किस तरह आत्मिक और आध्यात्मिक चेतना के द्वारा ' शुद्रा से शक्ति ' बन जाती है।इसका मार्मिक और भावनात्मक निरूपण इस रचना का वैशिष्ट्य है।"६

शबरी के माध्यम से कवि ने कई प्रश्नों को मुखरित किया है:–

क्या आत्मा की उन्नति केवल/है उच्च वर्ग तक ही सीमित?/प्रभु तो है सेवक पिता, भला/उनका आराधन क्यों सीमित? (समिधा – १, पृष्ठ ४८८)

शबरी की तपस्या उसे साधारण जन से विशेष बना देती है।उसकी आध्यात्मिक पिपासा ही उसे शूद्र से ब्राह्मणी से भक्त बना देती है।चिंतन शक्ति के कारण ही शबरी निम्नवर्ग से असाधारणता में बदल जाती है, "असल में कवि ने यह प्रश्न उठाया है कि अपनी चैतन्य की रक्षा के लिए सामूहिक जड़ता को तोड़ना अनिवार्य है।यही प्रश्न वाल्मीकि सामने था और यही नरेश के सामने भी है। वाल्मीकि की मानवीय दृष्टि से शबरी चरित्रवती हुई तो नरेश की दृष्टि से वहीं मंत्र –चरित्र बन गई।"७ कवि के शब्दों में:–

यह धरा, उपनिषद जैसे/वह मंत्र – देवता उसकी/यह उसकी पूजा ही की/अत्यन्त सरलता उसकी। (समिधा – २, पृष्ठ ५१९)

आधुनिक काव्यों के श्रेष्ठ आख्यानों में। ' प्रवाद पर्व ' अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सच दस्तावेज है। नरेश ने राम के व्यक्तित्व को लेकर समकालीन जावोन के प्रश्न को मानवीय परिप्रेक्ष्य में उत्तर खोजने का प्रयत्न किया है, "राम के प्रश्निल व्यक्तित्व के सहारे मानवीय चिंतन और आधुनिक व्यक्ति के संघर्ष को प्रस्तुत किया है।कवि का मानवीय दृष्टिकोण आद्यंत रचना में व्यापत है।"८ राजा ,राज्य और सामान्य– जन के संबंधों को कवि ने राम के माध्यम से प्रस्तुत किया है।वह मानता है कि शासक को तानाशाह नहीं होना चाहिए। सामान्य जन के अधिकारों का भी ध्यान रखना चाहिए।इस संदर्भ में यह उदाहरण दृष्टव्य है:–

अधिपति होने का अर्थ/राजा तो है/ पर राष्ट्र नहीं/जिस दिन भी/ऐसा मान लिया जाएगा/महानुभावों!/ इतिहास की वह सबसे गलत परम्परा होगी।/रावण : राष्ट्र का प्रतीक बन चुका था/इसीलिए लोगों के वर्चस्व ने/राष्ट्रीय मुक्ति के लिए युद्ध किया। (समिधा – २, पृष्ठ ४११)

आधुनिक– बोध ने मानव को तर्क – वितर्क की समझ प्रदान की,इसे कवि ने अपने काव्य में सहज ही उतारा है।खंड –काव्य ' प्रवाद – पर्व ' में नरेश मेहता इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि वक्त कैसा भी हो, राज्य कैसा भी हो, मानव सर्वोपरि है।कोई भी विशिष्ट व्यक्ति राज्य से बड़ा नहीं हो सकता। सीता की अग्नि परीक्षा भी इसी तथ्य को व्यापत करती है कि साधारण जन की भी शक्ति होती है,उसके भी कुछ अधिकार होते हैं। साधारण जन के किसी भी व्यक्ति के मन में उत्पन्न हुई शंका का निवारण केवल महान् त्याग द्वारा ही संभव है, ऐसा राम सोचते हैं। अमियचंद पटेल के शब्दों में, "राम को गहरा द्वंद्व ओर शासक के रूप में सीता को बनवास देने का निर्णय इस बात को सिद्ध करता है कि एक अनाम साधारण जन की तर्जनी को पूरा – पूरा महत्व मिलना चाहिए क्योंकि मानवीय गरिमा के लिए इसे रोक जाना औचित्यपूर्ण नहीं होता।"९ अतः प्रस्तुत काव्य जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है:–

क्या यही है मनुष्य का प्रारब्ध?/क्या इसीलिए मनुष्य/देश और काल की विपरीत चुंबकताओं में/जीवन भर/एक प्रत्यंचा– सा तना हुआ/कर्म का वाणों को वहां करने के लिए/पात्र या अपात्र?/दिशा या अदिशा में संधान करने के लिए/केवल साधना है? (समिधा – २, पृष्ठ ३५९) नरेश का काव्य युग ओर जीवन की कटु वास्तविकताओं से असंपृक्त नहीं है।आधुनिक जीवन में नारी की दशा का वर्णन करते हुए वह कहते हैं:–

एक दिन/साध्वी की भूषा में लिपटी उस नारी ने /उतार दिए आवरण/लांघे तापसता के सारे चौखटे/और मुक्ति के लिए वरण का किसी को लौटा दी/अपने को अपनी ही नारी। (समिधा– १, पृष्ठ ३८७– ३८८)

निष्कर्षात्मक अभिमत

कहा जा सकता है कि नरेश मेहता इक सतर्क कवि है।वे न तो पुरातन से कटे है और न ही आधुनिक से जुड़े है।उनका लक्ष्य मात्र सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना करना रहा है। जीवन के यथार्थ को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करना कवि का अपना एक काव्यात्मक प्रयास है।वर्तमान जीवन की उदासी– निराशा कवि प्रकृति के माध्यम से ही प्रस्तुत करता रहा है।आधुनिक समाज की विसंगतियों का वर्णन कवि ने यदा कदा अपने काव्य में किया है,उनकी दृष्टि में सत्य के अन्वेषी की उतनी महत्ता नहीं है जितनी आलोचना करने वाले की है। आधुनिक समाज पर व्यंग करके उसे सुधारने की ओर कवि के कदम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

१ रमेश कुंतल मेघ,आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण दिल्ली: अक्षर प्रकाशन,१९६९), पृष्ठ ३११

२ प्रभाकर माचवे, सप्तकत्रय:आधुनिकता एवं परम्परा (मेरठ: शलभ बुक हाउस,१९८०), पृष्ठ २३

३ प्रभाकर शर्मा , नरेश मेहता का काव्य विमर्श और मूल्यांकन (जयपुर: पंचशील प्रकाशन,१९८०),१३५

४ रामधारी सिंह दिनकर, आधुनिक बोध (दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस,१९८९), पृष्ठ २९

५ श्री नरेश मेहता से प्रभाकर क्षोत्रिय की बातचीत, श्री नरेश मेहता: दृश्य और दृष्टि, प्रमोद द्विवेदी (सम्) (नई दिल्ली:हिंदी बुक सेंटर,१९९७),२४०

६ डॉ. संतोष कुमारी, नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर (मथुरा:जवाहर पुस्तकालय,१९८०), पृष्ठ २१३

७ प्रभाकर शर्मा, नरेश मेहता का काव्य विमर्श और मूल्यांकन (जयपुर: पंचशील प्रकाशन,१९८०),१२४

८ वही, पृष्ठ १२७

९ अमियचंद पटेल, नरेश मेहता का काव्य संवेदना और शिल्प (कानपुर: आराधना ब्रदर्स,१९८०), पृष्ठ १०२